भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में काँगड़ा आज़ाद हिन्द फौज़ के सैनिक–शहीद मेज़र दुर्गामल का योगदान

डॉ अमर सिंह पराशर
ऐसोसिएट प्रोफेसर, विभाग इतिहास राजकीय महाविद्यालय धर्मशाला (हि.प्र.)

सार:-(*Abstract*) भारत की स्वतंत्रता संग्राम में गोरखाओं के वीर जवानों ने अपने प्राणों की बाजी लगाकर आजाद देश के सपने को साकार करने में अहम् योगदान दिया। जिन में 2/1 जीआर के प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी में मेजर दुर्गा मल्ल एक थे जिन्हें पकड़ कर अंग्रेजों ने दिल्ली में फांसी पर लटका दिया गया।

1.भूमिका-

शहीद मेज़र दुर्गामल आज़ाद हिन्द फौज़ के उन गौरवशाली वीर सेनानियों में से एक थे । जिन्होंने अपनी मातृभूमि की आज़ादी के लिये फाँसी के फंदे को सहर्ष स्वीकार किया ।

2. साहित्य की समीक्षा –

मैंने यहशोध शिर्षक इसलिए चुना है क्योंकि भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन तथा आज़ाद हिन्द फौज़ पर अनेक शोध कार्य किए गये हैं। परन्तु कॉगड़ा के स्वतंत्रता सेनानियों ने भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन तथा आज़ाद हिन्द फौज़ में जो सक्रिय कार्य किया और भारत की आज़ादी में अपना योगदान दिया, इस पर आज दिन तक किसी भी शोधार्थी ने गहनता से शोध नहीं किया है।

3. उद्देश्य –

इस शोधकार्य में शोधार्थी का उद्देश्य काँगड़ा क्षेत्र के स्वतंत्रता सेनानियों, आज़ाद हिन्द फौज़ के सैनिकों तथा आम जनता की राजनीतिक गतिविधियों व कुर्वानियों को भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के साथ जोड़ना हैं ।

4.कार्यप्रणाली –

इस शोधकार्य में शोधार्थी ने मौखिक तथा हस्तलिखिक दोनों प्रकार की सामग्री को प्रयोग में लाया गया है। मौखिक सामग्री शोधार्थी ने अति दुर्लभ स्थानों जाकर साक्षात्कारों के माध्यम से इक्कट्ठी की गयी है तथा लिखिक सामग्री के लिए शोधार्थी ने समस्त काँगड़ा क्षेत्र का सर्वेक्षण सर्वेक्षण किया है।

5 योगदान –

शहीद दुर्गामल का जन्म 1913 में देहरादून डोईवाला गाँव, निवासी गोरखा परिवार में श्री गंगामल के घर हुआ ।[1] बचपन से ही दुर्गामल को खेलकूद तथा पढ़ने लिखने का शौक था लेकिन वे एक अलग ही स्वभाव के युवक थे । अपने गोर्खाली समाज की दुर्दशा को देखकर उनका भावुक हृदय बेचैन हो उठता था । गोरखा समाज की दुर्दशा और पतन को देखकर बेचैन रहने वाले दुर्गामल छात्रावस्था से ही देश की पराधीनता और ज़र्जरावस्था के प्रति चिंतित थे ।[2] 1930 में जब दुर्गामल नवीं कक्षा में पढ़ते थे तो हिन्दोस्तान भर में सत्याग्रह आन्दोलन शुरू हुआ। वह भी स्थानीय जलसे जुलूसों में भाग लेने लगे। अंग्रेज़ी अधिकारियों को जब इस बात की सूचना मिली तो उन्होंने दुर्गामल को, इन गतिविधियों से दूर रखने हेतु उनके पिता पर दबाव डाला । पारिवारिक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए दुर्गामल अपने चाचा श्री केदारमल के पास धर्मशाला चले आये ।[3] लेकिन दुर्गामल के लिए धर्मशाला में अधिक समय बिताना उचित नहीं था क्योंकि यहाँ रहते हुए वह अपनी शिक्षा को आगे नहीं वढ़ा सकते थे ।

दुर्गामल, कुछ समय बाद 26 जनवरी, 1931 को 18 वर्ष की आयु में 2/1 गोरखा राईफ़ल्स (धर्मशाला) छावनी में भर्ती हो गये।[4] उन दिनों गोरखा बटालियन में भर्ती के लिए आने वाले युवक प्रायः अनपढ़ ही होते थे। परन्तु दुर्गामल शिक्षित थे । अतः उन्हें रिक्रूट ट्रेनिंग के बाद सिग्नल ट्रेनिंग के लिए पुणे भेजा गया । अपनी एकाग्रसेवा और दक्षता के आधार पर उन्हें जल्दी जल्दी पदोन्नति मिलती रही और कुछ समय के बाद ही उनकी सिग्नल हवलदार पर नियुक्ति हो गई ।[5]

1 सितम्बर, 1939 को यूरोप में जर्मनी द्वारा पोलैण्ड पर हमला किये जाने के बाद ब्रिटेन और फ्राँस ने पोलैण्ड को तत्काल सहायता पहुँचाने की घोषणा की गई । 3 सितम्बर, 1939 को द्वितीय विश्व युद्ध की घोषणा की गयी । 1941 में जापान का आक्रमण भी, ब्रिटेन पर अवश्यंभावी हो चुका था ।[6] दुर्गामल, सेना में लगभग 10 वर्ष सेवारत रहने के बाद जव 1941 को अवकाश प्राप्त कर घर पहुँचे तो उसकी शादी भागसू निवासी श्रीमती शारदादेवी ठाकुरी परिवार से हुई।[7]

दुर्गामल की यूनिट को 1941 में सिंगापुर जाने का हुक्म हुआ। अप्रैल, 1941 को दुर्गामल की यूनिट सिकन्दराबाद पहुँची फिर तोलाराम होती हुई, 22 अगस्त, 1941 को बम्बई पहुँची । वहाँ से 23 अगस्त, 1941 को जलमार्ग के द्वारा मलाया के लिए रवाना हुई और 3 सितम्बर, 1941 को मलाया पहुँची । 2/1 गोरखा बटालियन के अतिरिक्त अन्य गोरखा बटालियन भी मलाया पहुँच चुकी थी । 8 दिसम्बर, 1941 को जापान के द्वारा दक्षिणी पूर्वी एशियाई क्षेत्र में तैनात मित्रराष्ट्र की सेना के ऊपर आक्रमण किये जाने की कार्यवाई के साथ ही युद्ध की घोषणा की गई । उसके बाद दिन प्रतिदिन युद्ध की गति तीव्र होती चली गई । 11 दिसम्बर, 1941 तक शत्रु सेना ने ब्रिटिश सेना की दुर्गति कर दी । जापानी सेना के युद्ध कौशल एवं सामरिक शक्ति के सामने ब्रिटिश फ़ौज को घुटने टेकने पड़े । 15 फरवरी, 1942 को जापान ने सिंगापुर पर अधिकार कर लिया और मित्रसेना को जापानियों के आगे आत्मसमर्पण करना पड़ा ।[8]

17 फरवरी 1942 के दिन सिंगापुर के 'फरेर पार्क' में हुए, ऐतिहासिक समारोह में ब्रिटिश सेना की ओर से लैकर्नल हंट ने लगभग 70 हज़ार युद्ध बन्दी सैनिकों को कैप्टन मोहनसिंह, जिन्हें बाद में जरनल का पद प्रदान किया गया एवं कुछ अन्य ऑफिसरों की उपस्थिति में जापानी सेना के प्रतिनिधि मेज़र फुज़ीवारा के मार्फ़त जापान सरकार को सौंपा । इस घटना के बाद कैप्टन मोहनसिंह ने घोषणा की थी कि -

''हिन्दुस्तान की आज़ादी अब दरवाज़े पर आ पहुँची है। जापान ने ब्रिटिश एवं उनके मित्र सैनिकों को मलाया और सिंगापुर से खदेड़ दिया है, अब वर्मा से भी उन्हें खदेड़ दिया जाएगा । शताब्दियों से भारतीयों का खून चूसने वाले उन ब्रिटिश शासकों को भारत से खदेड़ने का दायित्व हरेक भारतीय नागरिक के उपर है । हम स्वतन्त्र होने काजो सपना देख रहे हैं । उसे साकार रूप देने के सिलसिले में जापान ने हर प्रकार की सहायता का वचन दिया है। ऐसी स्थिति में हमारा कर्तव्य बन जाता है कि हम एक मजबूत संगठन बनाएँ और चालीस करोड़ देशवासियों को मुक्त करने के लिए एकजुट होकर संघर्ष करें। इसी उद्देश्य को हृद्यगम करते हुए अब हम दक्षिण पूर्व एशिया में रहने वाले हिन्दुस्तानी सैनिक एवं साधारण नागरिकों को शामिल कर आज़ाद हिन्द फ़ौज का गठन करेंगे ।'' [9]

कैप्टन मोहनसिंह की इस घोषणा पर फरेर पार्क 'इन्कलाब जिन्दाबाद' के गगनभेदी नारों से गूँज उठा। फरवरी, 1942 में जब कैप्टन मोहनसिंह ने आज़ाद हिन्द फ़ौज का गठन किया तो दुर्गामल भी इसके वालंटियर बने। वह अपनी योग्यता से सैनिक ऑफिसर ट्रेनिंग के लिए चुने गये। वह लैफ्टिनेंट से कैप्टन और कैप्टन से मेज़र बन गये।[10]

21 अक्तूबर, 1943 को नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने आज़ाद हिन्द फ़ौज की कमान सम्भाली । वह जापान होते हुए सिंगापुर पहुँचे। इस समय तक वर्मा पर भी जापानियों का अधिकार हो चुका था । अतः नेताजी सुभाषचन्द्र बोस अपना हैडक्वार्टर सिंगापुर से रंगून ले आये। आज़ाद हिन्द फ़ौज की अस्थायी सरकार द्वारा मित्र सेना के विरूद्ध युद्ध की घोषणा किये जाने के बाद आज़ाद हिन्द फ़ौज को 1944 में विभिन्न मार्गों पर भेजा गया। मेज़र दुर्गामल जासूस विभाग में एक टुकड़ी के कमाण्डर नियुक्त किये गये । वे भेष बदलकर शत्रु क्षेत्र में घुस जाते तथा उनकी रिपोर्ट अपने फ़ौजी कमाण्डरों तक पहुंचाते थे।[11] दुर्भाग्यवश 27 मार्च, 1944 के दिन कोहिमा मणिपुर क्षेत्र में मेज़र दुर्गामल गिरफ़्तार कर लिए गए।[12] अंग्रेज़ी हाकिमों ने उन्हें अनेक प्रकार का मानसिक एवं कठोर शारीरिक यातनाएँ दी। उनको अपने ब्यान बदलने हेतु कहा गया। उनको अपनी ओर करने के लिए कई प्रलोभन दिये गये परन्तु मेज़र दुर्गामल टस से मस न हुए आखिर वे दिल्ली लाये गये ।

मेज़र दुर्गामल को युद्धबन्दी के रूप में लालकिले के बन्दी गृह में रखा गया। उनके विरूद्ध भारतीय सैनिक कानून की धारा तथा भारतीय दण्ड विधान की धारा 121 के अन्तर्गत सैनिक अदालत में मुकद्दमा चलाया गया । साम्राज्यवादी ब्रिटिश राज किसी भी प्रकार से स्वतन्त्रता संघर्ष का दमन करना चाहती थी। उन्हें प्रलोभन देते हुए कहा गया कि तुम यह कह दो कि मुझे ब्रिटिश राज के विरूद्ध भटकाया गया था इसलिए मैं क्षमा याचना करता हूँ अगर आप माफी माँगे तो तुम्हें क्षमा दान किया जा सकता है। अतः ब्रिटिश राज के प्रस्ताव को अस्वीकार करते हुए उन्होंने फाँसी के फन्दे को गले लगाना ही उपयुक्त समझा ।[13]

मेज़र दुर्गामल को फाँसी के तख्ते पर लटकाने के सैनिक अदालत के फ़ैसले को, तत्कालीन सैनिक प्रमुख के द्वारा पुष्टि किये जाने के बाद उसकी पत्नी श्रीमती शारदामल को पति के अन्तिम दर्शन करने की अनुमति दी गयी। मेज़र दुर्गामल पत्नी श्रीमती शारदामल को धर्मशाला से दिल्ली सरकारी पत्र द्वारा बुलाया गया। परिवार के अन्य सदस्य भी दिल्ली आये । ब्रिटिश अधिकारियों का अनुमान था कि श्रीमती शारदामल, पति को क्षमा याचना करने के लिए तैयार करा लेगी । लेकिन श्रीमती शारदामल, पति के समक्ष उपस्थित होते ही मूर्छित हो गयी । मूर्छित पत्नी को होश में लाते हुए मेज़र दुर्गामल ने कहा कि -

''मैं भारत माता की आज़ादी के लिए अपने प्राणों को न्योच्छावर कर रहा हूँ। तुम किंचित् भी दुःखी मत होना । मेरी अनुपस्थिति में करोड़ों भारतीय जनता तुम्हारे साथ होगी ।''[14]

मेज़र दुर्गामल की पत्नी श्रीमती शारदामल तथा परिवार के अन्य सदस्यों की मेज़र दुर्गामल से बन्दीगृह के अन्दर दो बार मुलाकात हुई । दोनों बार दुर्गामल प्रसन्नचित् व स्वस्थ पाये गये। उन्होंने विश्वास पूर्वक अपने रिश्तेदारों को कहा कि -

''अंग्रेजों के साथ इस स्वतन्त्रता की लड़ाई में चाह
जीत हो या हार हो, हिन्दोस्तान शीघ्र आज़ाद होगा।''

मेज़र दुर्गामल, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की प्रशंसा के साथ साथ जनरल मोहनसिंह व अपने अन्य देशभक्त साथियों की तारीफ करते न थकते थे। दूसरी बार एवं अन्तिम मुलाकात के दौरान मेज़र दुर्गामल ने मानव जीवन के अन्तिम स्वरूप की चर्चा की। फाँसी पर लटकाने से पूर्व मेज़र दुर्गामल से मुआफ़ीनामे पर हस्ताक्षर करने के लिए अन्तिम बार कहा गया लेकिन उन्होंने अन्तिम बार इस पेशकश को ठुकरा दिया। यह सोचकर कि नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने सिंगापुर पहुँचकर आज़ाद हिन्द फ़ौज के जवानों को एक नारा दिया था कि -

''दिल्ली चलो।''

दुर्गामल को यह सौभाग्य सबसे पहले प्राप्त हुआ। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का दूसरा नारा था कि -

''तुम मुझे खून दो,मैं तुम्हें आज़ादी दूंगा।''

मेज़र दुर्गामल को तामील का, इससे बढ़िया मौका कब मिलेगा।

''मैं खून दूंगा, तभी मुझे मुक्ति मिलेगी''

मेज़र दुर्गामल ने इस दृढ़ विश्वास के साथ मुआफी माँगने के बजाए फाँसी पर लटकना बेहतर समझा।[15] 15 अगस्त, 1944 के दिन वीर मेज़र दुर्गामल को लालकिले के कारागार से दिल्ली केन्द्रीय कारागार लाया गया। 10 दिन बाद 25 अगस्त, 1944 को उन्हें फाँसी के तख्ते पर लटका दिया गया। मेज़र दुर्गामल ने 'जयहिन्द' की पुकार के साथ हँसते हँसते फाँसी के फँदे को चुना और 31 वर्ष की अल्प आयु में शहीद हो गये। [16]

6. निष्कर्ष:-

इस प्रकार काँगड़ा के पहाड़ी क्षेत्र के एक और सुपूत मेज़र दुर्गामल ने भारत माता की आज़ादी के लिए अपने अनमोल जीवन को बलिवेदी पर न्योच्छावर कर दिया। उनकी बहादुरी, वीरता और देशभक्ति के चिन्ह आज भी काँगड़ा के समस्त पहाड़ी क्षेत्रों में और भारत के इतिहास में सदा अमर व जीवित हैं।

7. संदर्भ सूची :-

1. P.N. Chopra: *Who's who of Indian Martyrs (Vol-1),* Minister of Education and Youth Services, New Delhi, 1969 p.100.; *देखिये,* साक्षात्कार: श्रीमती श्यामा ठाकुर वहन अमर शहीद दुर्गामल, परिशिष्ट; (6) पृष्ठ 380, Dr. Amar Singh Prashar: *Ph.D Thesis, Contribution of Freedom Fighters and Martyrs of Kangra 1805-1947.*

2.राई, एम. पी.: *वीर जाति की अमर कहानी,* नेपाली से हिन्दी अनुवाद प्रकाश प्रसाद उपाध्याय साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, 2000, पृष्ठ 125.
3. हिमाचल प्रदेश सरकार: *स्वाधीनता* की ओर, भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 1993 पृष्ठ 69.
4. हिमाचल प्रदेश सरकार: *हिमाचल प्रदेश के स्वतन्त्रता सेनानी, खण्ड़ प्रथम*, भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 1985 पृष्ठ 94.; देखिये, राई, एम. पी.: वीर जाति की अमर कहानी, नेपाली से हिन्दी अनुवाद, प्रकाश प्रसाद उपाध्याय, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, 2000 पृष्ठ 126.
5. हिमाचल प्रदेश सरकार: *स्वाधीनता की ओर,* भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 1993 पृष्ठ 69.
6 राई, एम. पी. : *वीर जाति की अमर कहानी,* नेपाली से हिन्दी अनुवाद प्रकाश प्रसाद उपाध्याय साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, 2000, पृष्ठ 126.
7. वही, पृष्ठ 126.
8. हिमाचल प्रदेश सरकार: *स्वाधीनता का संकल्प,* भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 2005 पृष्ठ 45.; *देखिये,* राई, एम. पी.: *वीर जाति की अमर कहानी,* नेपाली से हिन्दी अनुवाद प्रकाश प्रसाद उपाध्याय साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, 2000, पृष्ठ 126.
9. National Archives New Delhi: *File No 218/INA (2) Indian National Army orders by Generals Mohan Singh General Officer Commanding Oct., 1942. P 107: Cited by* , National Archives New Delhi: *File No 221/INA- The growth of Indian Nation Army and the General Conditions of Indian pensioners of War in Singapur from 1942-1945 p.108.*
10. हिमाचल प्रदेश सरकार: *स्वाधीनता की ओर,* भाषा एवं संस्कृति विभाग शिमला 1993 पृष्ठ 70.; *देखिये,* हिमाचल प्रदेश सरकार: *हिमाचल प्रदेश के स्वतन्त्रता सेनानी, खण्ड़ प्रथम*, भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 1985 पृष्ठ 94.
11. हिमाचल प्रदेश सरकार: *स्वाधीनता का संकल्प,* भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 2005 पृष्ठ 45.: *देखिये,* राई, एम. पी.: *वीर जाति की अमर कहानी,* नेपाली से हिन्दी अनुवाद, प्रकाश प्रसाद उपाध्याय, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, 2000 पृष्ठ 129.
12. P.N. Chopra: *Who's who of Indian Martyrs (Vol-1),* Minister of Education and Youth Services, New Delhi, 1969 p.100.; *देखिये,* हिमाचल प्रदेश सरकार: *हिमाचल प्रदेश में स्वतन्त्रता संग्राम का संक्षिप्त इतिहास,* भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 1996 पृष्ठ 163.
13 हिमाचल प्रदेश सरकार: स्वाधीनता की ओर, भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 1993 पृष्ठ 70.; *देखिये,* राई, एम. पी .: *वीर जाति की अमर कहानी,* नेपाली से हिन्दी अनुवाद, प्रकाश प्रसाद उपाध्याय,साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, 2000 पृष्ठ 129.
14. साक्षात्कार:श्रीमती श्यामा ठाकुर वहन अमर शहीद दुर्गामल, परिशिष्ट; (6) पृष्ठ 380,Dr. Amar Singh Prashar: *Ph.D Thesis, Contribution of Freedom Fighters and Martyrs of Kangra 1805-1947*
15.हिमाचल प्रदेश सरकार: स्वाधीनता की ओर, भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 1993. पृष्ठ 70,71.;देखिये, हिमाचल प्रदेश सरकार: स्वाधीनता का संकल्प, भाषा एवं संस्कृति विभाग, शिमला, 2005 पृष्ठ 45, 46.
16. National Archives New Delhi: *File No 379/INA-CSDIC (Indian), information report (Part X) Durgamal, Red Fort, Delhi, 13 July, 1944* p.100